

Saraswati Chalisa PDF

(www.hindipronotes.com)

दोहा (Saraswati Chalisa)

जनक जननि पद्मरज, निज मस्तक पर धरि।
बन्दौं मातु सरस्वती, बुद्धि बल दे दातारि ॥

पूर्ण जगत में व्याप्त तव, महिमा अमित अनंतु।
दुष्जनों के पाप को, मातु तु ही अब हन्तु ॥

Saraswati Chalisa (चौपाई 1-10)

जय श्री सकल बुद्धि बलरासी।
जय सर्वज्ञ अमर अविनाशी ॥

जय जय जय वीणाकर धारी।
करती सदा सुहंस सवारी ॥

रूप चतुर्भुज धारी माता।
सकल विश्व अन्दर विख्याता ॥

जग में पाप बुद्धि जब होती।
तब ही धर्म की फीकी ज्योति ॥

तब ही मातु का निज अवतारी।
पाप हीन करती महतारी ॥

वाल्मीकि जी थे हत्यारा।
तव प्रसाद जानै संसारा ॥

रामचरित जो रचे बनाई।
आदि कवि की पदवी पाई ॥

कालिदास जो भये विख्याता।
तेरी कृपा दृष्टि से माता ॥

तुलसी सूर आदि विद्वाना।
भये और जो ज्ञानी नाना ॥

तिन्ह न और रहेउ अवलम्बा।
केव कृपा आपकी अम्बा ॥

Saraswati Chalisa (चौपाई 11-20)

करहु कृपा सोइ मातु भवानी।
दुखित दीन निज दासहि जानी ॥

पुत्र करहिं अपराध बहूता।
तेहि न धरई चित माता ॥

राखु लाज जननि अब मेरी।
विनय करउं भांति बहु तेरी ॥

मैं अनाथ तेरी अवलंबा।
कृपा करउ जय जय जगदंबा ॥

मधुकैटभ जो अति बलवाना।
बाहुयुद्ध विष्णु से ठाना ॥

समर हजार पाँच में घोरा।
फिर भी मुख उनसे नहीं मोरा ॥

मातु सहाय कीन्ह तेहि काला।
बुद्धि विपरीत भई खलहाला ॥

तेहि ते मृत्यु भई खल केरी।
पुरवहु मातु मनोरथ मेरी ॥

चंड मुण्ड जो थे विख्याता।
क्षण महु संहारे उन माता ॥

रक्त बीज से समरथ पापी।
सुरमुनि हृदय धरा सब काँपी ॥

Saraswati Chalisa (चौपाई 21-30)

काटेउ सिर जिमि कदली खम्बा।
बारबार बिन वउं जगदंबा ॥

जगप्रसिद्ध जो शुंभनिशुंभा।
क्षण में बाँधे ताहि तू अम्बा ॥

भरतमातु बुद्धि फेरेऊ जाई।
रामचन्द्र बनवास कराई ॥

एहिविधि रावण वध तू कीन्हा।
सुर नरमुनि सबको सुख दीन्हा ॥12

को समरथ तव यश गुन गाना।
निगम अनादि अनंत बखाना ॥

विष्णु रुद्र जस कहिन मारी।
जिनकी हो तुम रक्षाकारी ॥13

रक्त दन्तिका और शताक्षी।
नाम अपार है दानव भक्षी ॥

दुर्गम काज धरा पर कीन्हा।
दुर्गा नाम सकल जग लीन्हा ॥

दुर्ग आदि हरनी तू माता।
कृपा करहु जब जब सुखदाता ॥

नृप कोपित को मारन चाहे।
कानन में घेरे मृग नाहे ॥

Saraswati Chalisa (चौपाई 31-40)

सागर मध्य पोत के भंजे।
अति तूफान नहीं कोऊ संगे ॥

भूत प्रेत बाधा या दुःख में।
हो दरिद्र अथवा संकट में ॥

नाम जपे मंगल सब होई।
संशय इसमें करई न कोई ॥

पुत्रहीन जो आतुर भाई।
सबै छांड़ि पूजे एहि भाई ॥

करै पाठ नित यह चालीसा।
होय पुत्र सुन्दर गुण ईशा ॥

धूपादिक नैवेद्य चढ़ावै।
संकट रहित अवश्य हो जावै ॥

भक्ति मातु की करै हमेशा।
निकट न आवै ताहि कलेशा ॥

बंदी पाठ करै सत बारा।
बंदी पाश दूर हो सारा ॥

रामसागर बाँधि हेतु भवानी।
कीजै कृपा दास निज जानी।

॥दोहा॥

मातु सूर्य कान्ति तव, अन्धकार मम रूप।
झुबन से रक्षा करहु परूँ न मैं भव कूप ॥

बलबुद्धि विद्या देहु मोहि, सुनहु सरस्वती मातु।
राम सागर अधम को आश्रय तू ही देदातु ॥

Read more Chalisa at : www.hindipronotes.com